भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 | **अक्टूबर** 2003 | **अंक** 10

हिन्दी को व्यावहारिक स्तर पर राजकाज की भाषा के बतौर लागू करना मेरा मुख्य मिशन है। मेरा पहला प्रयास होगा संघ लोक सेवा की परीक्षाओं में हिन्दी को शामिल किये जाने के स्वीकृत प्रस्ताव में आयी अड़चन को दूर करना। उस प्रस्ताव को संसद ने मान लिया है। केन्द्रीय हिन्दी समिति ने इसके लिए परिपत्र भी जारी कर दिया, किन्तु कार्मिक विभाग उसे लागू नहीं कर रहा है। महाराष्ट्र में हिन्दी को राजभाषा के रूप में लागू कराने के लिए बम्बई हाईकोर्ट में जनता की याचिका का स्वागत है। हिन्दीभाषी प्रदेशों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

सभी दलों के सदस्य और सरकार से भी मुझे सहयोग मिलेगा, ऐसा विश्वास है। काम इसी तरह होता है, आलोचना से नहीं। जैसा अवसर आएगा वैसा रुख अपनाऊँगा, न सत्ता का अंग बनूँगा और न किसी दल का तरफदार। **— पं० विद्यानिवास मिश्र**

प्रतिदिन मर रही है एक भाषा

जिस अनुपात में देश में साक्षरता बढ़ी है उस अनुपात में पुस्तक प्रेम घटा है। हिन्दीभाषी समाज का अपनी मातृभाषा के प्रति वैसा लगाव नहीं है जैसा अन्य भाषा भाषियों का है। हिन्दी समाज ने अपनी भाषा का काम सरकार के भरोसे छोड़ दिया है। हिन्दी का मध्यवर्ग भी स्वयं अपनी भाषा को धोखा दे रहा है। इस वर्ग के लेखक विचारक अक्सर स्वयं अंग्रेजी में लिखते हैं। हिन्दीभाषियों के यहाँ हिन्दी साहित्य नहीं मिलता। हिन्दी क्षेत्रों में ज्यादातर स्कूल भी अंग्रेजी माध्यम के ही खुल रहे हैं। हिन्दी साहित्य का अध्यापन भी कमजोर है। **— अशोक वाजपेयी**

हिन्दी कभी दरबारी भाषा नहीं रही। राजभाषा का पद पा लेने के बाद भी हिन्दी दरबारदारी नहीं करती। राजभाषा के पद की जरूरत भी हिन्दी को नहीं है। हिन्दी सतत् संघर्ष और सामान्यजन की अस्मिता की भाषा रही है। आजादी के बाद से अब तक परिवर्तन के जितने प्रश्न हिन्दी ने उठाये हैं, संविधान और लोकतंत्र की जितनी देखभाल हिन्दी ने की है, वह बेमिसाल है। **— कमलेश्वर**

आज अर्थशास्त्र की भाषा अंग्रेजी है लेकिन जिस तरह से जीविकोपार्जन, उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में हिन्दी का प्रचलन बढ़ा है, वह अच्छा संकेत है। भाषा की समृद्धि भावनात्मक बातें कहने से नहीं, बल्कि इसे जीविका की भाषा बनाने से है।

— राजेन्द्र यादव

पुस्तक संस्कृति

आज यह प्रश्न आये दिन पूछा जाता है—पुस्तकें कौन पढ़ता है। इतनी पुस्तकें प्रतिवर्ष निकल रही हैं, विशेषकर हिन्दी पुस्तकें क्या उनके पाठक हैं ?

इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों है। जिनको पुस्तकें पढ़नी चाहिए, वे पुस्तकें पढ़ते नहीं और जो पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, उन तक पुस्तकें पहुँच नहीं पातीं।

पुस्तकों के पहले पाठक अध्यापक होते हैं जिन्हें अपने विषय की नवीनतम पुस्तकें पढ़नी चाहिए और अपने छात्रों तक उस विषय का नवीनतम ज्ञान पहुँचाना चाहिए। पर वास्तविकता यह है कि आज मुश्किल से एकाध प्रतिशत अध्यापक की रुचि नई पुस्तकों में होती है। उन्होंने जो जितना पढ़ा है, वे अपने छात्रों के लिए पर्याप्त समझते हैं। इसका परिणाम होता है, छात्र उक्त विषय के नवीनतम ज्ञान से वंचित रह जाता है। भारी भरकम वेतन पाने वाले यूनिवर्सिटी और डिग्री कालेजों के अध्यापक प्रतिमास कितनी राशि पुस्तकों पर व्यय करते हैं यदि इसका सर्वेक्षण कराया जाय तो वास्तविक स्थिति की जानकारी होगी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इसमें पहल करनी चाहिए। यूनिवर्सिटी और महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में पुस्तकें पहुँची तो अध्यापक उन्हें लेकर बैठ जाते हैं, छात्र उन पुस्तकों से वंचित रह जाते हैं। जिसके लिए उन्हें भारी वेतन तथा सुविधाएँ मिलती हैं, उन पर व्यय करना आवश्यक नहीं समझते। छात्र पुस्तकों के लिए तरसते रह जाते हैं।

साहित्य निरन्तर प्रवाहित धारा है, नई पुस्तकें निकलती रहती हैं। ज्ञान का निरन्तर विकास होता है। साहित्य अध्यापक के लिए आवश्यक है वह नई कृतियों से परिचित हों, ताकि वह अपने छात्रों को भी उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करें। तभी साहित्य में छात्र की रुचि होगी, ज्योति से ज्योति निकलेगी।

किसी नगर की बौद्धिक संस्कृति की जानकारी उस नगर की पुस्तकों की दुकान से होती है। देश-विदेश से कितने बुद्धिजीवी पर्यटक काशी आते हैं, उन्हें काशी में पुस्तकों की दूकान देखकर निराशा होती है, वे कहते हैं यहाँ चार-चार विश्वविद्यालय हैं क्या यहाँ के लोग पुस्तकें नहीं पढ़ते। वाराणसी प्राच्य विद्या के लिए ख्यात है, इसकी कुछ पुस्तकें भले ही मिल जायँ, अन्य पुस्तकें नहीं मिलतीं क्योंकि विश्वविद्यालय के अध्यापकों की उनके प्रति न जिज्ञासा है, न रुचि।

वे पाठक जिनकी पुस्तकों में रुचि है जो दूरस्थ स्थानों पर रहते हैं, उनको पुस्तकों की जानकारी कराने का साधन नहीं। जो समाचार पत्र उन तक पहुँचते हैं, उनमें पुस्तकों की चर्चा नहीं होती और जो पुस्तकें मँगाना चाहते हैं उन्हें भारी डाक व्यय के कारण हतोत्साह होना पड़ता है।

सर्वशिक्षा अभियान मानव संसाधन विकास मंत्री का नारा है। यह तभी सफल होगा जब बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि जागृत की जाय। उन्हें भाषा ज्ञान तक ही सीमित न रखा जाय। उन्हें पाठ्य पुस्तकों से इतर अन्य रोचक पुस्तकें उपलब्ध कराई जायँ, इससे उनमें कल्पना शक्ति जागृत होगी, वे परिवेश के प्रति सजग होंगे और स्वाध्याय की प्रवृत्ति पनपेगी। देश की विशाल जनसंख्या को शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से शिक्षित करना, उनका बौद्धिक विकास कर सकना सम्भव नहीं है। स्वाध्याय ही इसका एकमात्र माध्यम है। इसका माध्यम पुस्तक संस्कृति का विकास है और यह तभी सम्भव है जब सारे देश में पुस्तकालयों की श्रृंखला बनाई जाय। इसके लिए पुस्तकालय आयोग की स्थापना की जाय। इसका ध्येय पुस्तकों का संग्रह मात्र न हो, पाठकों को पुस्तकों के निकट लाना इसका लक्ष्य हो। पुस्तकालयों में पुस्तक चर्चा की व्यवस्था हो। लेखकों से पाठकों के संवाद भी होने चाहिए। इससे लेखकों को पाठकों की रुचि का विकास होगा और लेखक को भी अपने सामाजिक दायित्व का बोध होगा। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को चुनौती देने का यही उपाय है—पुस्तक संस्कृति का विकास। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

पुरस्कार-सम्मान

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा

64 विद्वानों को हिन्दी सेवा सम्मान

केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल, आगरा के उपाध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य' ने 23 सितम्बर 2003 को निम्नलिखित सम्मान पुरस्कारों की घोषणा की—

गंगाशरण सिंह सम्मान :
काज वेंकटेश्वर राव (तेलगू), रमननाथ (मलयालम), मुरलीधर मारुति जगताप (मराठी) तथा रमेन्दकुमार पाल (बंगाली)

गणेशशंकर विद्यार्थी सम्मान :
ईश्वर चन्द्र सिनहा, मनु शर्मा (वाराणसी), सत्यपाल पटाइल।

सुब्रहण्यम् भारती सम्मान :
एन० चन्द्रशेखरन नायर, धर्मपाल मैनी।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सम्मान :
रामदरश मिश्र, डॉ० तंकमणि अम्मा।

डॉ० जार्ज गियर्सन सम्मान :
डॉ० मारिया नेज्यैशी (हंगरी)।

डॉ० मोट्रि सत्यनारायण सम्मान :
हरिशंकर 'आदेश' (त्रिनिदाद)

आत्माराम सम्मान :
डॉ० सक्सेना, श्यामसुन्दर शर्मा

राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम निर्धारित तिथि को ये पुरस्कार प्रदान करेंगे। सम्मान स्वरूप प्रत्येक को एक लाख रुपये दिये जायेंगे।

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की यह पूरी सूची नहीं है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा 1961 ई० में स्थापित स्वायत्त संगठन केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित एक स्वायत्तशासी अखिल भारतीय शैक्षिक संस्था है। मुख्यालय आगरा में स्थित है। इसके पाँच केन्द्र—दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग तथा मैसूर में कार्यरत हैं।

एशिया अमेरिकी साहित्य सम्मान

भारतीय मूल की लेखिका **मीरा नायर** को 2003 के एशिया-अमेरिकी साहित्य पुरस्कार के लिए चुना गया है। यह पुरस्कार उन्हें 'वीडियो स्टोरीज' नामक उनकी किताब के लिए दिया गया है। इस किताब में 10 भारतीयों के आप्रवासी अनुभव का वर्णन है। नायर को यह पुरस्कार 8 दिसम्बर को दिया जाएगा।

युवा साहित्यकारों को प्रतापनारायण मिश्र सम्मान

भाऊराव देवरस सेवा न्यास ने सात युवा साहित्यकारों को 'प्रतापनारायण मिश्र सम्मान' प्रदान किया। राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री ने 23 सितम्बर को रायबरेली में फीरोज गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के 'इन्दिरा गाँधी सभागार' में मथुरा की अनामिका मिश्र को काव्य में, बिजनौर की डॉ० सविता मिश्र को कथा साहित्य में, आगरा के रमाशंकर को बाल साहित्य, गाजियाबाद के आलोक गोस्वामी को पत्रकारिता, वाराणसी के डॉ० राजाराम शुक्ल को संस्कृत, असम के पराणकुमार बरुवा को असमिया भाषा के साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया। न्यास 1995 से यह सम्मान देता आ रहा है।

लोकभूषण अर्जुनदास केसरी को उत्तर प्रदेश रत्न सम्मान

लोककला के प्रमुख रचनाकार तथा लोकवार्ता शोध पत्रिका के सम्पादक **डॉ० अर्जुनदास केसरी** को 12 अक्टूबर 2003 को आल इण्डिया कान्फ्रेन्स ऑफ इंटेलेक्युअल्स ने लखनऊ में उनके विशिष्ट कृतित्व के लिए 'उत्तर प्रदेश रत्न' से सम्मानित किया। डॉ० केसरी इन दिनों करमा नृत्य पर राष्ट्रीय फेलोशिप के अन्तर्गत शोध कार्य कर रहे हैं। आपने अभी 'रामार्णव' प्राचीन कृति तीन खण्डों में प्रकाशित की है।

सारस्वत-सम्मान समारोह

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) में अपने वार्षिक अधिवेशन तथा हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी साहित्य के शिखर पुरुषों, प्राज्ञ पुरुषों व समुन्नायकों को मानद उपाधियाँ प्रदान कर उनका सारस्वत-सम्मान किया।

इसी क्रम में **डॉ० रंजन सूरिदेव** को अपनी मानद उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' से समलंकृत किया।

मध्यप्रदेश शासन के साहित्यिक पुरस्कार

मध्यप्रदेश सरकार के 2003-04 के सम्मान पुरस्कारों की घोषणा—

कबीर सम्मान (डेढ़ लाख) :
एस० रहमान राही, कश्मीर के प्रख्यात कवि

मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (एक लाख) :
शेखर जोशी

इकबाल सम्मान (एक लाख) :
उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि रफत सरोश

शरद जोशी सम्मान (इक्यावन हजार) :
दूधनाथ सिंह, इलाहाबाद

राज्यस्तरीय सम्मान (इकतीस हजार) :
कविवचन दूबे

राष्ट्रीय महात्मा गाँधी सम्मान :
वनवासी आश्रम, गोविन्दपुर, जिला-सोनभद्र

पुरस्कार स्वरूप नगद राशि के अतिरिक्त प्रत्येक लेखक को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया जाता है।

पुरस्कार के लिए आयु बाधक नहीं

हरियाणा साहित्य अकादमी ने अपनी 4 सितम्बर 2003 की बैठक में निश्चय किया है कि किसी भी विशिष्ट कृति का रचनाकार किसी भी आयु का हो पुरस्कार प्राप्त करने का अधिकारी होगा। अकादमी द्वारा एक बार पुरस्कृत किये जाने पर लेखक दूसरी बार भी अकादमी पुरस्कार प्राप्त कर सकेगा।

मैंने जीवन में कभी किसी पुरस्कार के लिए अपनी ओर से कोई भी प्रयास नहीं किया। जीवन के अन्तिम समय में जबकि नौ दशक पूरा कर चुका हूँ, यह समाचार पाकर प्रसन्नता हुई कि गणेशशंकर विद्यार्थी के नाम पर सम्मानित किया जायगा जिनको मैं एक पत्रकार के रूप में अपना आदर्श मानता रहा हूँ। मुझे आर्थिक सहयोग से अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि मेरा नाम देश के सबसे महान और बलिदानी पत्रकार के नाम के साथ जुटने जा रहा है। — **ईश्वरचन्द्र सिन्हा**

कथन

गोरखपुर विश्वविद्यालय में पुनश्चर्या कार्यक्रम के अन्तर्गत

हिन्दी काव्य-चिन्तन में संवाद प्रियता और वैचारिक द्वन्द्व महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ काव्य-चिन्तन निरा चिन्तन ही नहीं है, यह गहरे अर्थों में सभ्यता की समीक्षा भी है। हिन्दी काव्य-चिन्तन पर अभिव्यंजनावाद, प्रयोगवाद, उत्तरआधुनिकतावाद आदि पश्चिमी विचारों और आन्दोलनों का असर रहा है लेकिन हमारे कवियों, आलोचकों ने इसे विवेक सम्मत ढंग से स्वीकार किया है।

हिन्दी जैसा समृद्ध काव्य-चिन्तन किसी दूसरी भारतीय भाषा में नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसा व्यक्तित्व किसी दूसरी भारतीय भाषा में नहीं है। मुक्तिबोध, अज्ञेय, विजयदेवनारायण साही और मलयज जैसे काव्य चिन्तक अन्य भाषाओं में विरल है। हिन्दी काव्य चिन्तन दो परम्पराओं के बीच विकसित हुआ। पहली परम्परा संस्कृत की समृद्ध काव्य परम्परा है।

— अशोक वाजपेयी

राजकाज में जो हिन्दी प्रयोग की जा रही है, वह खग भाषा है। उसे उसका प्रयोगकर्ता भी नहीं समझ पाता। इस भाषा का दुर्भाग्य यही है कि अत्याचार, अनाचार, अशुद्ध प्रयोग सब इसके साथ होता है और इसका भाषी इसे स्वीकार कर लेता है।

— अशोक वाजपेयी

छायावाद के समय से ही कविता को न तो परम्परागत शास्त्रीय विद्वान ही समझा पा रहे थे और न ही सामान्य पाठक इसीलिए रचनाकार को बतौर आलोचक आगे आना पड़ा।

जिस समय कवि रचनाकार की भूमिका में होता है उस समय रचना को अन्तिम सच्चाई तक नहीं पहुँचा पाता। वहीं कवि जब कुछ दिनों बाद पुर्नमूल्यांकन करता है तो उसकी धारणा अपने लिखे के प्रति बदल जाती है। रचना का मिजाज, समाज की सच्चाई, कविता की अतिक्रमण करने की प्रवृत्ति किसी एक विचारधारा में समाहित नहीं हो पाती। आज की कविता अवांछित और अमानवीय प्रवृत्तियों का प्रतिरोध कर पा रही है। **— डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

स्मृति-शेष

डॉ० विजयशंकर मल्ल

भारतेन्दु के हँसमुख गद्य के पारखी तथा प्रगतिवाद के प्रख्यात समीक्षक डॉ० विजयशंकर मल्ल का 31 अगस्त 2003 को निधन हो गया। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक से जीवन की शुरूआत की और विभागाध्यक्ष पद से 1982 में सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने अपने प्राध्यापक जीवन के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय में विदेशी छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से हिन्दी अध्यापन का भी कार्य किया था।

डॉ० विजयशंकर मल्ल का जन्म 1921 ई० में आजमगढ़ (अब मऊ) जिले के लखनौर ग्राम में हुआ था। उन्होंने आठवीं तक की शिक्षा आजमगढ़ तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पाई थी। उन्होंने हिन्दी में प्रेमचंद पर 'आनर्स' तथा एम०ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम प्राप्त किया था। वे आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के शिष्य और पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी के अत्यन्त स्नेहपात्र थे।

मल्लजी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। विश्वविद्यालय में अध्यापन के साथ ही उन्होंने 'आज' में 'मनन और मनोरंजन' कालम कई वर्षों तक लिखा था। वे 'आज', 'हंस', 'माधुरी' आदि समकालीन पत्रिकाओं में उन्होंने 'जयेश' नाम से कहानियाँ लिखीं। वे 'आज' के वार्षिक साहित्य विशेषांक के लेखकों में थे। उन्होंने सन् 1950-55-56 तक हिन्दी के विभिन्न पक्षों पर समीक्षात्मक लेख लिखे। हिन्दी साहित्य के बारे में अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' में उन्होंने समीक्षात्मक लेख लिखे।

मल्लजी आधुनिक साहित्य, विशेषत: भारतेन्दु और उनके मण्डल के साहित्यकारों के गहन अध्येता और विशेषज्ञ थे। भारतेन्दु के निबन्धों के लिए 'हँसमुख गद्य' की संज्ञा उन्होंने दी थी। उन्होंने हिन्दी में प्रगतिवाद पर पहली समीक्षा-पुस्तक 'हिन्दी में प्रगतिवाद' लिखी जो अपने जमाने में चर्चित हुई साथ ही आज भी वह उतनी ही मूल्यवान और उपयोगी है। वे हिन्दी गद्य के पारखी थे। उन्होंने 'हिन्दी गद्य-शिल्प का विकास' विषय पर शोधकार्य किया था।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी के कार्यकाल का स्वर्ण युग था। उस युग में सभी प्राध्यापक हिन्दी साहित्य के किसी काल के विशेषज्ञ होते थे। डॉ० विजयशंकर मल्ल हिन्दी के आधुनिक काल के मर्मज्ञ थे। साथ ही वे तुलसी साहित्य के गम्भीर अध्येता थे। उनके निधन से द्विवेदीजी की परम्परा की एक कड़ी टूट गयी।

मृदुभाषी मल्लजी छात्रों और मित्रों सभी के शुभचिन्तक थे। वे परदोष निरीक्षक नहीं थे। उनके विचार स्पष्ट और नपे-तुले होते थे।

उन्होंने पण्डित प्रतापनारायण मिश्र के निबन्धों का संकलन किया था जिसका प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा ने किया था। इसके अतिरिक्त तीन खण्डों में प्रतापनारायण ग्रन्थावली का सम्पादन किया था जो प्रकाशित होनेवाली है। उनके निधन से हिन्दी की क्षति हुई।

नाग बोडस नहीं रहे

हिन्दी के जाने-माने नाटककार नाग बोडस का 17 सितम्बर 2003, बुधवार को तड़के जयपुर में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 63 साल के थे।

9 दिसम्बर 1939 को अंबाह, मध्यप्रदेश में जन्मे नाग बोडस ग्वालियर में बस गए थे। वैसे वे मूलत: महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के रहनेवाले थे। 'पढ़ो फारसी, बेचो तेल', 'खूबसूरत बहू', 'नर-नारी उर्फ थेंकू बाबा लोचनदास', 'कृति-विकृति', 'टीन-टप्पर', 'बीहड़', 'दलित', 'तोता झूठ नहीं बोलता', 'कम्पनी', 'अम्मा तुझे सलाम', 'मगर आराम के साथ', 'वरदान' और 'अग्नि' जैसे नाटकों के लेखक नाग बोडस की अन्य रचनाओं में 'कट्टस', 'सड़क पर से', 'बीहड़ में दावत', 'तौबा', 'लंपट' (रंग एकालाप), 'मेनीफेस्टो' (उपन्यास), 'पाजामे में आदमी' (कहानी-संग्रह) शामिल हैं।

मीरां पंचशती समारोह

इस समारोह के अन्तर्गत मीरां के पदों पर आधारित भक्ति संगीत संध्या, नृत्यनाटिका तथा भक्ति साधना पर विचार संगोष्ठियाँ आयोजित की जायेंगी। साथ ही विद्यालयों में भाषण, निबन्ध व भजन गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा। इसी क्रम में 'मीरा पंचशती ग्रन्थ' के प्रकाशन की योजना है जिसमें मीरां के व्यक्तित्व एवं उनकी भक्ति साधना व जीवनदर्शन पर विद्वानों के लेख तथा मीरां के प्रामाणिक पद, व्याख्या सहित दिये जायेंगे।

धूत हाउस, अशोक मार्ग — **राधेश्याम धूत**
जयपुर-302 001

हमें एक ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए, जो आत्मावलंबन की भावना से गर्भित हो, ताकि हम मनुष्यों का निर्माण करें, मशीनों का नहीं। (भारत का पुनर्जन्म : महर्षि अरविंद)

हमारे संत कवि

नामदेव (दर्जी), कबीर (जुलाहा), दादू (धुनिया), रविदास (चमार), सैण (नाई), नाभादास (डोम), सधना (कसाई), धन्ना (जाट)।

श्रमजीवी लघु पत्रिकाएँ

राष्ट्रीय लघु पत्रिका समन्वय समिति ने लघु पत्रिका के सूत्रधार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जयन्ती 9 सितम्बर को 'लघु पत्रिका दिवस' के रूप में देशभर में मनाने का निश्चय किया। 'कविवचन सुधा' हिन्दी की प्रथम लघु पत्रिका थी।

काशी मुमुक्षु भवन सभा परिसर में वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह की अध्यक्षता में 'लघु पत्रिकाएँ : कल, आज और कल' विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ। छत्तीसगढ़ से पधारे 'परस्पर' सम्पादक आनन्द बहादुर की प्रेरणा से आयोजित इस गोष्ठी में कविवर ज्ञानेन्द्रपति ने कहा—लघु पत्रिका स्थानीय पत्रिका नहीं है। स्थानीयता व सार्वदेशिकता का सन्तुलन साधकर जो पत्रिकाएँ चलती हैं वही गम्भीर होती हैं। आज लघु पत्रिका का परिसर बड़ा हुआ है। लघु पत्रिका में लघु मानव की छाया है। अध्यक्ष डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा कि जिस साम्राज्यवादी और पूँजीवादी हमले को हम भुगत रहे हैं—लघु पत्रिकाओं को कहीं-न-कहीं से औजार बनाना चाहिए—आपकी आवाज होगी, दूसरे इससे परिचित होंगे, यही इसकी सार्थकता और प्रासंगिकता है।

गोष्ठी में डॉ० चौथीराम, डॉ० गया सिंह, डॉ० देव, डॉ० दीनबन्धु तिवारी, डॉ० गौतम चटर्जी, डॉ० शैलेन्द्रकुमार सिंह, अनिमेष उपाध्याय, राजेन्द्र आहुति प्रभृति ने भाग लिया। गोष्ठी का संचालन करते हुए वरिष्ठ समीक्षक डॉ० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा—लघु पत्रिकाएँ फटे हाल समाज को सिलने का काम करती हैं। संस्थानों की भीमकाय पत्रिकाएँ बड़े संसाधनों के होते हुए भी अल्पप्राण होती हैं। उन्होंने कहा—काशी में नई पुरानी लघु पत्रिकाओं का संग्रह करके 'भारतेन्दु लघु पत्रिका संग्रहालय' स्थापित करना चाहिए।

कला समय

भोपाल से प्रकाशित सुप्रतिष्ठित सांस्कृतिक पत्रिका 'कल समय' द्वारा मूर्धन्य रंगकर्मी स्व० ब०व० कारंत पर प्रकाशित विशेषांक का विमोचन ख्यात संस्कृतिकर्मी कवि श्री अशोक वाजपेयी द्वारा भारत भवन में किया गया।

श्री अशोक वाजपेयी ने अपने उद्‌बोधन में श्री कारंत के अवदान को रेखांकित करते हुए 'कला समय' की इस विहंगम प्रस्तुति की प्रशंसा की। इससे पूर्व 'कला समय' विख्यात रंगकर्मी श्री हबीब तनवीर, चित्रकार श्री विष्णु चिंचालकर तथा छायाकार श्री वामन ठाकरे पर विशेषांकों का प्रकाशन कर चुकी है।

कला समय
ई० 7/21
अरेरा कालोनी
भोपाल

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर अंक मिला। बहुत सी जानकारी मिली। दिल्ली में होने वाली घटनाओं की जानकारी इसी पत्रिका से मिल जाती है। इस अंक में श्री राजेन्द्र यादव के पुरस्कारों के सम्बन्ध में विचार पढ़ने को मिले। कुछ न कुछ नया वे कहते ही रहते हैं। अब बताइये, अगर उनकी बात मानकर 70 वर्ष की आयु पार करने वाले लेखक को तो कोई पुरस्कार मिलेगा ही नहीं, तब मेरे जैसे मसिजीवी का क्या होगा? भूले-भटके 8-10 साल में छोटा-मोटा पुरस्कार मिल जाता है तो कुछ सहायता हो जाती है। अब बताइये सान्त्वना के लिए ही सही कोई याद तो कर लेता है; खैर वह हमारे शुभचिन्तक हैं, कुछ अच्छा ही सोचा होगा। साहित्य राजनीति का शास्त्र है, यह आज की स्थिति में सच ही है। मैं बहुत सी समितियों से जुड़ा रहा हूँ। बड़े कटु अनुभव हैं, लेकिन साहित्य अकादमी में मैं दस साल रहा लेकिन पुरस्कार के सम्बन्ध में कोई मेरे पास सिफारिश लेकर नहीं आया। राजनीति छोटी भाषाओं में चल सकती है, बड़ी भाषा में मुश्किल है। हाँ, इधर जो परिवर्तन हुए हैं, तीनों निर्णायक मिल बैठते हैं, उसमें गड़बड़ होने की सम्भावना है।

17.9.03 **— विष्णु प्रभाकर**
दिल्ली-34

'भारतीय वाङ्मय' सीमित पृष्ठों के बावजूद प्रत्येक अंक में आपका वैचारिक सम्पादकीय, स्मृति शेष, पठनीय पत्रिकाएँ, पुस्तक मेले, पुरस्कार सम्मान, कथन आदि कुछ ऐसे स्तम्भ हैं जो पुस्तक प्रेमियों को बेतरह आकर्षित करते हैं। पुरस्कारों के सम्बन्ध में प्रख्यात लेखक राजेन्द्र यादवजी के विचारों से सहमत हुआ जा सकता है। विश्वभर में साहित्य के अनेक बड़े-छोटे पुरस्कार युवावस्था में ही दिये जाते हैं, बुकर पुरस्कार लेने वाले भारतीय लेखक भी इनमें शामिल हैं। लेकिन हमारे यहाँ एक भेड़ चाल सी बन गयी है साहित्य हो या सिनेमा राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार मरते हुए या मरणोपरान्त प्रदान कर गौरवान्वित अनुभव किया जाता है।

— डॉ० तारीक असलम तस्नीम
सम्पादक
लेखनी प्रकाशन
6/2, हारून नगर, फुलवारीशरीफ
पटना 801505

हमारे देश में परिस्थिति भिन्न है। हमारे यहाँ वयोवृद्ध लेखक को स्मृति शेष कर दिया जाता है, यह नहीं सोचा जाता कि उसका जीवन कैसे चल रहा है, उसे इतनी रायल्टी नहीं मिल पाती कि उसका जीवनयापन हो सके। उसे पुरस्कार नहीं जीने के लिए तो कुछ चाहिए। क्या साहित्य-संस्कृति के सरकारी विभाग कभी इस दृष्टि से विचार करते हैं। श्री विष्णु प्रभाकर जो जीवन के नौवें दशक को पार कर रहे हैं क्या ऐसे लेखकों को भुला दिया जाना चाहिए।

— सम्पादक

'भारतीय वाङ्मय' के जुलाई अंक में साहित्यकारों का बालीवुड दिल्ली पढ़ा। आपने जो सच्चे प्रश्न उठाए हैं, वे अनुकरणीय-विचारणीय हैं। पुस्तकों की खरीद में जो धाँधली और भ्रष्टाचार है, उसने केवल प्रकाशकों को ही नहीं, लेखकों को भी आचार-संहिता से हटाया है। प्रभाकर श्रोत्रिय ने भी जो प्रश्न उठाया है, वह भी सही है। लेखक अपने वजूद से कट कर, अपनी धरती और परिवेश की सहज सच्चाईयों को भूल कर दिल्ली के तथाकथित सोच, सच्चाई और कुछ चौंकाने की प्रवृत्ति से जुड़ रहा है, यही कारण है कि अन्य भाषाओं के लेखक हिन्दी पाठकों से जुड़ रहे हैं और हिन्दी का पाठक आत्ममुग्ध भाव से जी रहा है। इस पर गम्भीरता से सोचना है और लेखकों को अपने वजूद से जुड़ना है।

— यादवेन्द्र शर्मा, दिल्ली

पत्रिका में साहित्यिक बौद्धिक खबरों का खजाना है। इसमें विचारपूर्ण सामग्री है। इसकी समीक्षा गम्भीर और ज्ञानप्रद होती है। यह परम बौद्धिक, सांस्कृतिक, सारस्वत, पुण्य कार्य है।

— ओमप्रकाश वर्मा, जमशेदपुर

'भारतीय वाङ्मय' के जुलाई 2003 के अंक में स्मृति-शेष, पुरस्कार-सम्मान, कथन एवं पुस्तक समीक्षा सराहनीय है, इस पत्रिका के माध्यम से विद्वान, नवागन्तुक लेखकों एवं पाठकों के विचारों का समागम होना ही इस पत्रिका की मुख्य भूमिका प्रतीत हो रही है, इससे साहित्य जगत की नवीनतम जानकारी मिलती है।

— उदयप्रकाश रंजन, दरभंगा

दिल्ली पुस्तक मेले ने यह सिद्ध कर दिया कि पुस्तकों की पाठकों को आवश्यकता है। पहले दिन से अन्तिम समय तक पुस्तकें बिक रही थीं। कोई स्टाल खाली नहीं दिखाई दे रहा था। इस वर्ष कुम्भ के मेले से कम भीड़ इस पुस्तक मेले में भी नहीं थी। पुस्तकें खूब बिकीं। पाठकों में अभी भी अच्छी पुस्तकों की भूख है, वे अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकें ढूँढ़ते फिरते हैं। **— सुखपाल गुप्त**
आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का अगस्त का अंक 8 प्राप्त हुआ। पत्रिका में साहित्य एवं साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण जानकारी के साथ सद्य: प्रकाशित ग्रन्थों को जानने का सुयोग मिला। वस्तुत: पूर्वोत्तर क्षेत्र में आपकी पत्रिका हिन्दी से जुड़े लोगों को साहित्य जगत से जोड़ने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस महान सेवा के लिए आपकी संस्था इस सुदूर प्रान्त में सराही जाती है।

— दिनेशकुमार चौबे, शिलांग

'भारतीय वाङ्मय' की सभी सामग्री स्तरीय और प्रेरक रहती है। आपका सम्पादकीय धारदार और मर्मस्पर्शी लगता है।

मेरे लिए तो 'भारतीय वाङ्मय' काशी से जुड़ाव का माध्यम है जिसे पाकर ही मन जुड़ा जाता है।

— दिलीप सिंह, धारवाड

आमतौर पर निकलनेवाले गृह पत्रिका में केवल अपने प्रकाशनों पर जोर दिया जाता है। 'भारतीय वाङ्मय' में अन्य क्षेत्रों की गतिविधियाँ भी रहती हैं।

आपका सम्पादकीय एक मशाल की तरह है, जो घुप्प अँधेरे में प्रकाश बिखेरने की कोशिश करता है। मैं जिस राह पर चलकर थक गया हूँ आप उस पर निरन्तर चल रहे हैं। परमात्मा आपको शक्ति दे उसी प्रकार आगे बढ़ते रहने की।

— दयानन्द वर्मा, नई दिल्ली

हर साक्षर नागरिक के लिए यह जरूरी है कि वह कुछ-न-कुछ पढ़ता रहे। पढ़ने से ही बुद्धि तीव्र होती है और ज्ञान में वृद्धि होती है। व्यक्ति का विकास बहुत बार पढ़ने से ही हो जाता है। **— दीनानाथ मल्होत्रा**

गटर में डालने योग्य थीसिस

बी०एच०यू० की सारी थीसिस गटर में फेंकने लायक है। यहाँ का शोध का स्तर इतना गिरा हुआ है कि मुझे अपने पर शर्म आती है कि मैंने भी यहीं से पी-एच०डी० की। **— प्रो० रामचन्द्र राव**
कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारतीय वाङ्मय में पुस्तक परिचय तथा समीक्षा

हमारा उद्देश्य 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से केवल अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार नहीं है, वरन् भारतीय साहित्य जगत विशेषकर हिन्दी क्षेत्र की गतिविधि तथा प्रमुख प्रकाशनों से पाठकों को परिचित कराना है। इसी उद्देश्य से 'भारतीय वाङ्मय' अपने पृष्ठों में वृद्धि कर कतिपय नई पुस्तकों की समीक्षा अथवा परिचय प्रकाशित करेगा। नई पुस्तकों के प्रकाशन की सूचना भी देगा। प्रकाशकों को समीक्षा के लिए अपनी एक-दो प्रमुख कृति भेजनी चाहिए। **—सम्पादक**

मन्त्र तन्त्र सम्बन्धी पुस्तकें

मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित

मन्त्र महोदधि	400.00
हिन्दी मन्त्रमहार्णव	
देवी खण्ड : 400.00, देवता खण्ड : 400.00	
मिश्र खण्ड : 200.00	
कुलार्णव तन्त्र	200.00
धनदारतिप्रिया तन्त्रम्	10.00
वृहत् तन्त्रसार (मूलमात्र)	400.00
डामर तन्त्र	50.00
कामरत्नतन्त्रम्	100.00
हारीतसंहिता	150.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

लोकार्पण समाचार

''प्रतिकार और संघर्ष से उत्पन्न शक्ति के शब्दों से ही इतिहास का निर्माण होता है। कवियों को तमाम विसंगतियों के बावजूद आस्था जगाने के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए।''

डॉ० तारिक असलम 'तस्नीम' की सद्य: प्रकाशित कविता-संग्रह पुस्तक 'शब्द इतिहास नहीं रचते' के अवसर पर साहित्यकारों ने प्रकट किये। पुस्तक का लोकार्पण समारोह साहित्यिक संस्था 'समय संवाद' और 'युवा साहित्यकार परिषद' पटना के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

वरिष्ठ कवि श्री परेश सिन्हा ने पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कहा कि निस्संग पड़ जाने पर ही शब्द इतिहास नहीं रचते हैं। कुंद हो जाने पर शब्दों से भी चिढ़ हो जाती है। कवियों को किसी व्यवस्था के प्रति आस्थावान होना चाहिए।

प्रा. अनिता ठक्कर को हिन्दी में पी-एच.डी.

मुम्बई विश्वविद्यालय ने प्रा० अनिता विजय ठक्कर को 'हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में दक्षिण भारत की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का योगदान' शीर्षक उनके शोध-प्रबन्ध पर हिन्दी में पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की है। इस शोध प्रबन्ध में पहली बार दक्षिण की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं तथा उनके द्वारा किए गए हिन्दी के प्रचार कार्य को अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

सातवाँ गुजरात हिन्दी प्रचारक सम्मेलन

गुजरात विद्यापीठ की हिन्दी प्रचार समिति के हिन्दी प्रचारकों का 'सातवाँ गुजरात हिन्दी प्रचारक सम्मेलन' रविवार, 14 सितम्बर 2003, हिन्दी दिवस के रोज गुजरात विद्यापीठ के उपासनाखण्ड में आयोजित हुआ। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकररावजी चौधरी विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर 'गुजरात में हिन्दी का विकास' प्रदर्शनी का उद्घाटन तथा प्रचारक सम्मेलन हुआ।

मीराबाई की 500वीं जयन्ती

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के तत्त्वावधान में मीराबाई के 500वीं जयन्ती के अवसर पर सुश्री महिला कसेवा ने मीरा के भजन प्रस्तुत किये। 500 वर्षों के अन्तराल पर समर्पित भक्त मीराबाई को स्मरण करना एक शुभ सांस्कृतिक उत्सव है। अकादमी के सचिव श्री नानकचंद को बधाई।

राष्ट्रीय पुस्तक मेले में `सरस्वती' का प्रवेश निषिद्ध

पिछले दिनों पश्चिम बंगाल के उच्च शिक्षामंत्री श्री सत्य साधन चक्रवर्ती ने कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले के उद्घाटन समारोह का बहिष्कार किया क्योंकि समारोह में मंच पर सरस्वती की प्रतिमा विराजमान थी। सत्य साधन का सत्य कथन था कि सरस्वती प्रतिमा को स्थान दिए जाने से गैर हिन्दुओं की भावनाएँ आहत होती है।

कला साहित्य संस्कृति की जननी वीणा पाणि पुस्तकधारिणी देवी भी किसी वर्ग विशेष को आहत कर सकती हैं। बंकिम, रविन्द्र, शरत् के प्रदेश के शिक्षामंत्री की यह सोच! खड्गधारिणी दुर्गा की जिस भव्य रूप में बंगाल में दुर्गापूजा होती है क्या वे गैर हिन्दुओं को आहत नहीं करतीं? उन्हें भी तत्काल बन्द कर देना चाहिए। और नहीं तो मंत्रीजी को किसी सराय में जाकर मुँह छिपाकर बैठ जाना चाहिए ताकि वे गैर हिन्दुओं की भावना आहत होते न देख सकें।

पद्मभूषण पं० विद्यानिवास मिश्र राज्यसभा में

ललित निबन्धकार, साहित्य समीक्षक, पत्रकार पं० विद्यानिवास मिश्र का राज्यसभा के लिए मनोननयन हिन्दी जगत के लिए स्वागत एवं गौरव का विषय है। कितनी सरकारें आईं और गई किन्तु पिछले कितने दशकों से हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहने वाली किसी सरकार ने राज्यसभा में हिन्दी के साहित्यकार को प्रवेश नहीं दिया। मैथिलीशरण गुप्त, बनारसीदास चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवंशराय बच्चन और भगवतीचरण वर्मा इतिहास बन चुके, उनके बाद लगता है हिन्दी में कोई साहित्यकार हुआ ही नहीं जो राज्यसभा में प्रवेश प्राप्त करने योग्य हो। साहित्यकार जन-जन में लोकप्रिय हो, राजनीति में उसकी पैठ हो, क्या अब राज्यसभा के लिए यही मानदण्ड है? सिने अभिनेता, संगीतकार, पत्रकार किसी भी श्रेणी में क्या साहित्यकार नहीं है। बहरहाल देर आयद दुरुस्त आयद। सरकार को हिन्दी के साहित्यकार की सुधि आई जिसने अपनी रचनाओं में लोक-जीवन को अभिव्यक्त किया है और देश की सांस्कृतिक साहित्यिक निधि को संरक्षण प्रदान किया है।

मिश्रजी के राज्यसभा में प्रवेश से सारा हिन्दी जगत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है और आशा है राज्यसभा में हिन्दी की अस्मिता के लिए मिश्रजी की वाणी गूँजेगी। स्वागत और बधाई।

मिलकर किताबें छापेंगे भारत और पाकिस्तान

भारतीय प्रकाशक परिसंघ और पाकिस्तानी पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर संघ ने पुस्तक की पायरेसी रोकने के लिए मिलकर पुस्तकें छापने का निश्चय किया है।

दोनों देशों के बीच पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने, संयुक्त रूप से प्रकाशन तथा कापीराइट की खरीद बिक्री आसान बनाने के लिए यह समझौता किया गया।

❑ ❑ ❑

राजस्थान विधान परिषद ने सर्वसम्मति से राजस्थानी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत है। इस सम्बन्ध में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी से राजस्थान विधान सभा के इस संकल्प को साकार करने का अनुरोध किया है।

❑ ❑ ❑

दक्षिण भारत के प्रमुख राष्ट्रीय पत्र हिन्दी के 125 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा—

'एक अखबार को कमजोर की आवाज और उम्मीद छोड़ चुके लोगों की उम्मीद' बनना चाहिए। आजकल के बड़े अखबारों और पत्रिकाओं के चमकदार पन्नों में आम आदमी कहीं दिखाई नहीं पड़ता।

सनसनीखेज शीर्षक और खबरों को कॉलमों में समटेने की कमजोरी के कारण जल्दी में फैसला करने की प्रवृत्ति आती जा रही है जिसके कारण कभी-कभी तथ्यों और उनके सही प्रस्तुतिकरण के साथ भी समझौता कर लिया जाता है।

हमें भारतीय मीडिया पर पूरा भरोसा है, यह अपनी जिम्मेदारियाँ और व्यावसायिक नैतिकता को पूर्ण रूप से निभा सकता है। मीडिया को अपनी लक्ष्मण रेखा खुद खींचनी चाहिए।

वाजपेयीजी ने अपनी चिरपरिचित शैली में 'हिन्दू' के प्रधान सम्पादक श्री एन० राम की तरफ मुखातिब होकर कहा—क्या यह कहूँ कि रामरेखा खींचनी चाहिए।

सचल पुस्तकालय अथवा चलता फिरता पुस्तकालय

भारतीय वाङ्मय के सितम्बर अंक में 'पुस्तक, पुस्तकालय तथा पाठक' विषय में चिन्ता प्रकट करते हुए जो विचार प्रगट किया है, वह सारगर्भित व समसामयिक है। यह सच्चाई एवं वास्तविकता है कि आज भ्रष्टाचार समाज के सभी क्षेत्र में अपने पैर जमा चुका है, चाहे पुस्तक की बात हो या पुस्तकों की खरीद। पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाने की बात तो दूर-दूर तक नजर नहीं आती।

भारत सरकार तथा राज्य सरकारें प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया 'सर्वशिक्षा अभियान तथा प्रौढ़ शिक्षा' के प्रचार प्रसार में खर्च कर रही है पर वास्तव में इससे जनता को कितना लाभ मिल रहा है यह विचारणीय है। वर्ष के अन्त में सरकार चेतती है, मार्च में यकायक पुस्तकें खरीद ली जाती हैं और विशेष प्रकाशकों के गोदाम से उठकर सरकारी गोदामों में चली जाती हैं। यह खरीदार को भी नहीं पता कि ये पुस्तकें किसके लिए और क्यों खरीदी जा रही हैं।

आपने राजाराम मोहनराय फाउण्डेशन व राज्य सरकारों द्वारा पुस्तक खरीद की प्रक्रिया की बात उठाई, इससे मैं भी पूर्णरूपेण सहमत हूँ। आज पाठक को क्या चाहिए, वह क्या पढ़ना चाहता है, हम किस प्रकार के समाज की रचना करने जा रहे हैं, यह भी गम्भीर एवं विचारणीय विषय है।

स्कूल के नाम पर स्थान है तो वहाँ बैठने के लिए टाट पट्टी नहीं, पढ़ाने के लिए अध्यापक नहीं, बाकी पुस्तकों व कापी, पेंसिल तथा पुस्तकालय का होना तो बहुत दूर की बात है। आपने गाँव-गाँव तक टेलीफोन व टेलीविजन की बात कही, बात ठीक है परन्तु यह भी सूचना प्रौद्योगिकी के कारण सम्भव हो पाया, परन्तु स्थायी ज्ञान के बिना बुद्धि का विकास नहीं हो पाता। बुद्धि विकास से व्यक्ति वास्तव में व्यक्ति बन पाता है जो केवल पढ़ने और पुस्तकों के माध्यम से ही सम्भव है। केन्द्रीय सरकार ने आजकल ग्राम पंचायतों को बहुत अधिकार दिये हैं, जिसमें शिक्षा की देख-रेख भी अब उन्हीं को सौंप दी गई है। ग्राम पंचायत यदि पुस्तक प्रसार, पुस्तकालय योजना को सही दिशा प्रदान कर सके तो ग्राम पुस्तकालय पठन रुचि बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान कर सकती है। इनके द्वारा बालकों तथा प्रौढ़ों तक समय पर पुस्तकें पहुँच सकती है। इसका उदाहरण मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही पुस्तकालय योजना है। गाँव-गाँव में एक पुस्तकालय खोलकर उसकी सारी जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों को सौंप दी है, जो पाठकों तक पहुँचाने में सफल भी हो रही है।

अभी एक विज्ञप्ति राजस्थान सरकार ने भी निकाली है उसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश के अनुरूप वहाँ भी 5016 पुस्तकालय व वाचनालय खोलने की योजना बनाई है। सरकार पुस्तकें भी खरीद लेगी परन्तु वे पाठकों तक कैसे पहुँचे, यह महत्त्वपूर्ण है। सरकार यदि पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाना चाहती है तो इसमें ग्राम पंचायतों की अहम भूमिका हो सकती है। इस विषय में मेरा एक नम्र सुझाव है कि यदि पटसन के थैले बनवाकर उसमें बीस-बीस, तीस-तीस, पुस्तकें रखकर 'सचल पुस्तकालय या चलता फिरता पुस्तकालय' बनाकर पाठकों की रूचि के अनुसार, उन्हीं की भाषा में (मातृभाषा) पुस्तकालय चलायें जायें तो पाठकों तक पुस्तकें अवश्य पहुँच पायेंगी। इसके लिए कुछ प्रेरक (Volunter) रखे जाने चाहिए, उन्हें सायकिल सुलभ करानी चाहिए, जो समय-समय पर खेत खलिहानो या गाँव की बस्ती में पुस्तकें लेकर जायें तो पठन रुचि जरूर बढ़ेगी अन्यथा योजनाएँ बनती रहेंगी, पुस्तकें खरीदी भी जायेंगी और अन्त में योजना की इतिश्री होकर रह जायेगी। सायकिल पर उन्हीं की भाषा में 'सचल पुस्तकालय' लिखा होना चाहिए।

आपने पुस्तकालय कोष्ठक की बात कही, पुस्तकों की चयन प्रक्रिया आदि के विषय में लिखा, सब ठीक है। पुस्तकें तो अभी भी प्रकाशक राष्ट्रीय पुस्तकालयों को भेजते ही हैं, परन्तु उनका न तो पाठकों को, न प्रकाशकों को लाभ पहुँच पा रहा है। आप और हम अपनी बात कहते रहेंगे, इस प्रकार सब बातें चलती रहेंगी। इस योजना के लिए एक आन्दोलन की आवश्यकता है जो पाठकों, लेखकों तथा प्रकाशकों के संगठन के माध्यम ही सम्भव हो पायेगा।

आर्य बुक डिपो — **सुखपाल गुप्त**
दिल्ली

पुस्तक समीक्षा

महाभारत का काल निर्णय

डॉ० मोहन गुप्त

पृष्ठ : 16 + 208 — मूल्य : 300.00

ISBN : 81-7124-

डॉ० मोहन गुप्त प्रशासन एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक सुपरिचित नाम है। उनके शोध-ग्रन्थ 'महाभारत का कालनिर्णय' एक ऐसा अप्रतिम प्रयास है जो सर्वश्री चिन्तामण विनायक वैद्य, यू०एन० घोषाल, वी०जी० अय्यर, सीताराम पाण्डे, शंकर बालकृष्ण दीक्षित, जे०एस० करन्दीकर, पी०सी० सेनगुप्त, के०एल० दफ्तरी, के०एल० अभ्यंकर, हेमचन्द्र रायचौधरी, पी०वी० काणे, प्यारेलाल भार्गव आदि उल्लेखनीय लेखकों की परम्परा में आते हुए भी एक सम्मानजनक पार्थक्य एवं मौलिकता रखता है। मूलत: यह ग्रन्थ काल-निर्धारण की ज्योतिर्मिति विधि के आधार पर महाभारत-युद्ध की तिथि के निर्धारण की अत्यन्त गहराई से श्रमसाध्य प्रयास करता है। लेखक ने पूर्ववर्ती अनेक मत-मतान्तरों का खण्डन करते हुए महाभारत युद्ध का जो तिथि-पत्र दिया है, उसके अनुसार गतकलि 1150 के अन्तिम दिन, चैत्र कृष्ण अमावस्या के (मध्यरात्रि का) अहर्गण 420044 है तथा अधिमास-शेष 4 दिन 16 घ० 15 प० है। अत: इस वर्ष का 54 दिन पूर्ण हुआ, अर्थात् (31 + 23 = 24 फरवरी) 23 फरवरी समाप्त हुई। नया साल चैत्र शुक्ल 1 कलि शक 1151 फरवरी 24 रविवार को प्रारम्भ होता है।

तदनुसार महाभारत-युद्ध का तिथि-पत्र निम्नानुसार बनता है—

संवत् गतकलि	1151 मार्गशीर्ष अमावस्या
शक पूर्व	2029 गुरुवार
ईस्वी पूर्व	1952 दिनांक 17 अक्टूबर
जूलियन वर्ष	2762 (2761 वर्ष, दिन 290)
कल्यादि अहर्गण	420280 (पूर्ण)

(कलि शुक्रवार को प्रारम्भ हुआ, अत: 7 से भाग देने पर पूरा कट जाता है, अत: गुरुवार हुआ।) उनके अनुसार युद्ध ई०पू० 1952 में मार्गशीर्ष अमावस्या को ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रारम्भ होकर पौष कृष्ण पक्ष द्वितीया तक अठारह दिनों तक चला। उन्होंने डॉ० ग०वा० कवीश्वर की उस मान्यता को पूरी तरह अस्वीकृत कर दिया कि यह युद्ध 35 दिनों तक लड़ा गया।

किन्तु यह ग्रन्थ केवल भारत युद्ध के काल-निर्धारण तक ही सीमित नहीं है। वह भारत युद्ध की पूर्वापर पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्पराओं को पुन: निर्धारण करता है और पार्जिटर, भारत सावित्री, वैदिक एज आदि द्वारा पुरस्सरित वंशावलियों का उचित संशोधन एवं परिमार्जन भी करता है। उनका यह ग्रन्थ प्राचीन भारतीय नाराशंसियों, वंशावलियों एवं ऐतिहासिक परम्पराओं की क्रमबद्धता और पूर्वापेक्ष अधिक पूर्णता का एक अप्रतिम प्रयास है। भारत युद्ध की तिथि-निर्धारण एवं उसके परिप्रेक्ष्य में इतिहास-दर्शन से जुड़े प्रबुद्धजन में डॉ० गुप्त के निर्णय चाहे चर्चा एवं आलोचना के विषय हों, किन्तु एक बात आईने की तरह स्पष्ट है कि उनके निष्कर्ष बड़ी वैज्ञानिकता के साथ प्रस्तुत हुए हैं, व्यावहारिक हैं एवं इतिहास की दृष्टि से अधिक मान्य हैं। वे विभिन्न मान्यताओं के मध्य कोई मार्ग नहीं चुनते, अपितु अपने ढंग से अनुसन्धान करते हुए विश्वसनीय-सी लगने वाली पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा की प्रस्थापना अवश्य करते हैं। इस ग्रन्थ की सार्थकता विद्वज्जन आने वाले समय में अधिकाधिक रेखांकित करेंगे, पाण्डित्य के धरातल पर भी और अन्तरानुशासनात्मक प्रस्तुति के रूप में भी। इतिहास, वेद, पुराण, ज्योतिर्विज्ञान से सम्बन्धित विद्वानों के लिये निश्चित ही यह एक विचारोत्तेजक एवं शोधपरक सामग्री है।

— डॉ० श्यामसुन्दर निगम
'शोध समवेत' XI/3-4 में प्रकाशित

भगवद्गीता-काव्य

(गीता का हिन्दी काव्यानुवाद)

भारतीय वाङ्मय में गीता का सर्वोपरि स्थान है। भारतीय साहित्य ही क्यों, विश्व-साहित्य में इसका अनूठा स्थान है। दुनिया की कोई ऐसा भाषा नहीं जिसमें इस पर टीका अथवा व्याख्या न की गयी हो। बताया जाता है कि गीता पर अभी तक दो हजार से अधिक भाष्य और व्याख्याएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। अपने देश में आदिशंकराचार्य से लेकर आज तक शताधिक महारथियों ने विभूतिमयी गीता के अध्यात्म-विज्ञान के रहस्यों का उद्घाटन किया है। महात्मा तिलक और योगिराज अरविन्द ने तत्वान्वेषी की दृष्टि से भाष्य किया है। प्रस्थान्त्रयी में गीता का स्थान है। इसी से इसके महत्व और महात्म्य का संकेत मिल जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक के पद्यानुवादक श्री मूलचन्द पाठक (पता—अभ्युदय 77-ए, बी रोड, अम्बामाता स्कीम, उदयपुर-313 004 (राजस्थान) संस्कृत साहित्य के आचार्य और हिन्दी भाषा मर्मज्ञ प्राध्यापक हैं। गीता का पद्यानुवाद अति कठिन है। हिन्दी में गीता के दर्जनों अनुवाद निकले हैं, किन्तु भाषान्तर में उसके मूल भाव को प्रदर्शित करना सामान्य काम नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक कई दृष्टियों से अपना स्वतंत्र स्थान बनाती है। गीता में कई छन्द हैं, किन्तु अधिकांशत: अनुष्टुप छन्द ही हैं।

प्रस्तुत अनुवाद में गीता के अनुष्टुप् में रचित पद्यों को, 16 मात्रा वाले छन्द में अनूदित किया गया है जो अनुष्टुप् के समान ही हिन्दी का लोकप्रिय छन्द कहा जा सकता है। इस आध्यात्मिक वाङ्मय की अनुपम विभूति का इतना बढ़िया अनुवाद अनुवादक की शास्त्र की पारंगता का परिचायक है। अनुवाद गेय और मनोरम है। पुस्तक पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय है। **—पानासि**

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कार्याँ* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ *''* 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क *अरुणकुमार शर्मा* 200.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी *''* 180.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) *''* 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) *''* 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य *''* 300.00
परलोक विज्ञान *''* 300.00
कुण्डलिनी शक्ति *''* 250.00
भौतिक सत्ता में प्रवेश 200.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00
वेद व विज्ञान *''* 180.00
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00
पूर्ण कामयोग *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00
कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00
अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00
रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00
भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00
श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00
श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00
गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00
भारत सावित्री *वासुदेवशरण अग्रवाल* 200.00
युगान्त *इरावती कर्वे* 50.00
रामायणकालीन संस्कृति *शा०ना० व्यास* 60.00
रामायणकालीन समाज *शा०ना० व्यास* 60.00
भारतीय संस्कृति *साने गुरुजी* 50.00
हमारी संस्कृति के प्रतीक *महादेव शास्त्री जोशी* 12.00
हिन्दू धर्म *वियोगी हरि* 15.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00
क्रम-साधना 80.00
अखण्ड महायोग 80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00
श्री साधना 50.00
दीक्षा 80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 300.00
कविराज प्रतिभा 64.00
ज्ञानगंज 60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00
परातंत्र साधना पथ 40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00
काशी की सारस्वत साधना 35.00
भारतीय साधना की धारा 30.00

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

सुखी जीवन : कैसे ? *डॉ० एल०पी० पाण्डेय* 90.00
योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120.00
योग के विविध आयाम *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50.00
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए *डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय* 50.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

संत महात्मा : जीवनचरित

विवेकानन्द : रोमां रोलां 80.00
रामकृष्ण परमहंस : रोमां रोलां 125.00
महात्मा गाँधी : रोमां रोलां 120.00
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90.00
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 175.00
उत्तर योगी : (श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन) *शिवप्रसाद सिंह* 200.00
भगवान् बुद्ध *धर्मानन्द कोसम्बी* 160.00
गुरु नानकदेव *डॉ० जयराम मिश्र* 125.00
मानवपुत्र ईसा *डॉ० रघुवंश* 160.00
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम *डॉ० जयराम मिश्र* 100.00
रामभक्त शक्तिपुंज हनुमान *''* 50.00
लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण *''* 90.00
महर्षि दयानन्द *यदुवंश सहाय* 200.00
स्वामी राम *डॉ० र०श० केलकर* 120.00

स्वामी रामतीर्थ *डॉ० जयराम मिश्र* 200.00
शिरडी साईं बाबा (दिव्य महिमा)
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त 60.00
सत्य साईं बाबा (जीवन और संदेश)
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त 150.00
पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) :
(जीवन और मिशन) *डॉ० इकबाल अहमद* 75.00
संत रैदास *डॉ० योगेन्द्र सिंह* 125.00
डॉ० भीमराव अम्बेदकर :
(व्यक्तित्व के कुछ पहलू) *मोहन सिंह* 100.00
राजा राममोहन राय *डॉ० के०सी० दत्त* 150.00
लोकनायक समर्थगुरु रामदास
डॉ० सच्चिदानन्द परलीकर 175.00

इतिहास, संस्कृति और कला

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150.00
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep*
Int. by Dr. O.P. Kejariwal 800.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India
Dr. Mahendra Pratap Singh 100.00
The Imperial Guptas Vol. I-II
Dr. P.L. Gupta (Each) 200.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर 250.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरण लाल* 60.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 200.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा
डॉ० लल्लनजी गोपाल 150.00
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव 200.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ
डॉ० श्रीराम गोयल 50.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ " 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन)
प्रो० ए०के० नारायण 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण(गुप्त-पूर्व) काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 200.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के " 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ " 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ
(600 से 1200 ई.) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु " 200.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा " 120.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण " 325.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 250.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* 150.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा
प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० उषारानी बंसल* 50.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं
सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00

पठनीय पुस्तकें

भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान
डॉ० विवेकी राय
भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना

प्रज्ञा
एनीबेसेन्ट स्मृति अंक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका
अंक 42-46 (भाग-1-2)
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 4 **अक्टूबर 2003** **अंक : 10**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082